काशी के आमोद-प्रमोद की विविध कलात्मक-परम्परा

काशी नगरी की दिनचर्या में कुछ ऐसी विशेषताएँ परम्परागत रूप से मान्य रहीं, जो काशीराज से लेकर जन-सामान्य तक में समान रूप से पाई जाती रही हैं। सादा जीवन, उच्च विचार, धार्मिक निष्ठा, स्वभाव में सहजता, स्वाभिमान, अक्खड़पन एवं परम संतोष के साथ एक मस्ती, व्यवहार कुशलता में कृत्रिमता का अभाव, एक विशेष खुलेपन के साथ सहज आत्मायता, सच्चरित्रता, धार्मिक सहिष्णुता एवं प्रत्येक कलाओं तथा प्रत्येक क्षेत्र के प्रति पूर्ण आदर एवं स्नेह की भावना आदि गुण सभी के हृदय पर अपनी अमिट छाप अंकित कर देने वाले रहे, जिससे स्थानीय या अन्य प्रदेशों से काशी आये विद्वान् ही नहीं, अपितु विदेशी यात्री, विद्वान् एवं सामान्य पर्यटक तक प्रभावित रहें है। उत्तरवाहिनी पुण्यसलिला गंगा के तट पर बसी इस नगर की प्रातःकालीन अनुपम छटा को देखकर अमीर खुसरो, मिर्जा गालिब से लेकर काशई के कबीर, सुप्रसिद्ध शायर नजीर बनारसी तक ने अपनी कलम से 'सबहे बनारस' उक्ति को न्नकर अपनी लेखनी को पवित्र किया है। काशी की अनुपम गंगाधारा से अठखेलियाँ करती सूर्यरिश्मयाँ क्रमशः बालरवि, प्रखर सूर्य एवं थकित प्रकाश देवता के साथ-साथ क्रमशः रक्तवर्णी, रजत रश्मि एवं स्वर्ण रश्मियों का मान कराती हुई सायंकालीन शोभा यात्रा के स्वा गत के लिए प्रस्थान करती हैं। काशई के घाटों की इस मीलों लम्बी अपूर्व शोभा यात्रा ता वर्णन सहृदय कवियों, लेखकों की लेखनी द्वारा अनेक संदर्भों में व्यक्त किया जाता रहा है। ब्राह्ममुहूर्त में काशिराज एवं अन्य नरेशों के घाटों पर अवस्थित विशाल अट्टालिकाओं, शिवालयों, देवमंदिरों के सिंहद्वार के ऊपर 'नौबत खानों' से आती शहनाई की मंगलध्वनि से प्रातःकालीन रागों ललित, जोगिया, कालिंगड़ा, रामकली, भैरव, भैरवी की अनुपम स्वर लहरियों एवं मंदिरों, शिवालयों के कंगूरों से मंगल आरती की देवस्तुति, शंख, घण्टा, घड़ियाल की पवित्र ध्वनि, वेदाध्यायी विद्वानों के आवासी पाठशालाओं से आती वेदध्वनी, संगीतज्ञों के निवास-स्थानों से संगीत साधनारत साधकों के द्वारा तंत्रीनाद, कंठसंगीत एवं नूपुरों की झंकृत स्वरवल्लरियों के साथ काशी के समान्य नागरिकों के झुण्ड़ों द्वारा उच्चारित हर-हर महादेव शम्भो, काशी-विश्वनाथ गंगे, के उद्घोष के साथ पुण्य-सलिला माँ गंगा की पवित्रतम लहरों में स्नान करने की उत्फुल्लता के साथ इस नगरी का सवेरा अनेक शताब्दियों से निरन्तर जीवन्त होता आया है।

आमोद-प्रमोद की विभिन्न कलात्मक परम्परा के संदर्भ में इस नगर की दैनिक दिनचर्या में धार्मिक आस्था, वाणी की उदारता, शास्त्रार्थपटुता, लेखनपटुता में निर्भीकता, संस्कृति, परम्परा एवं देशप्रेम, आस्था, निःशुल्क विद्यादान, गोदान, अन्नदान, संकटकालीन स्थितियों में उदारता की पराकाष्ठा आदि चारित्रिक, धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गुणों से ओतप्रोत इस नगर की गतिशीलता अन्य नगरों से सर्वथा मिला रही है। 'चना चबैना गंगाजल जो पुरवै करतार, काशी कबहुँ न छोड़िए विश्वनाथ दरबार' उक्ति को चरितार्थ करती काशीवासियों में वे सभी मानवीय गुण विद्यमान रहे है, जिनसे किसी नगरी की विशिष्टता बनती है। यहाँ का नागरिक ब्राह्ममुहूर्त में निद्रादेवी की गोद से उठकर दैनिक कृत्यों से निवृत होकर माँ गंगा भी धारा में स्नान कर, अपनी झारी-कमण्डल में गंगाजल लेकर बाबा विश्वनाथ, माँ अन्नपूर्णा एवं अन्य देवालयों के देवी देवताओ का गंगाजल, पुष्प, अक्षत, विल्वपत्र से अभिषेक, दर्शन, अथवा दूर के सिसी उपवन, सरोवर अथवा गंगा के पार ढढ़ाई-बादाम-विजया भवानी के सेवन के उपरान्त कुछ काल शारीरिक व्यायाम के बाद सुगन्धित पुष्प, इत्र आदि से सज्जित होकर भगवती दर्शन, इक्का-घोड़ा दौड़, गंगातट की सैन अथवा सुरूचिसम्पन्न आमोद-प्रमोद पण्डि सभा, शास्त्रार्थ सभा, काव्य गोष्ठी अथवा संगीत गोष्ठी में भाग लेकर सुखद उच्चस्तरीय मनोरंजन में भाग लेने का व्यसनी रहा है। यहाँ के विद्वान् सरस्वती की गम्भीर उपासना में ही स्वाध्याय करते हुए अधीत शास्त्रों का निःशुल्क अध्ययन-अध्यापन का वाग्वेवी की दिव्य आराधना में ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर हर्ष का अनुभव करते रहे हैं। काशीराज एवं देश के अन्य नरेशों की ओर से भारतीय धर्म, आचार विचार संस्कृति की रक्षा एवं उन्नति के लिए काशी में अनेक पाठशालाओं की स्थापना की गई थी, जिनका सम्पूर्ण व्यय उन नरेशों के राजकोष से दिया जाता था, जो विद्वानों के लिए उनका जीविका और स्थायी रूप से काशी में निवास करने का एक विशिष्ट प्रयोजन और प्रलोभन था।

गंगातट पर पक्के घाटों का निर्माण एवं विभिन्न मतमतान्तरो के देवी-देवताओं, आचार्यों के मंदिरों, देवालयों, मठो, आश्रमें

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

काशी/वाराणसी की संगीत परम्परा

में विधिवत् पूजन, अर्चन, दर्शन, निःशुल्क आवास एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था भी उन्हीं राजाओं के राजकोष अथवा सम्पन्न धनाढ्यों के द्वारा स्थापित न्यासों के द्वारा सुचारू रूप से सम्पादित होती थी। पाठशालाओं में विद्वानों एवं विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क शिक्षा, आवास, वस्त्र, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था से लाभान्वित अत्यन्त मन्दबुद्धि विद्यार्थी भी विद्वानों की सत्संगति में अध्ययनरत रहकर कालान्तर में विशिष्ट विद्वान् बन जाता था और अपने कुल, वंश, ग्राम, नगर के यश को उज्जवल करता था। विद्वानों की विशिष्ट विद्वत्ता का जन-सामान्य पर प्रभाव डालने के लिए समय-समय पर विद्वत् गोष्ठई, पाण्डित सभा, शास्त्रार्थ, संगीतगोष्ठी आदि एवं विद्यार्थियों के स्वाध्याय की परीक्षा के लिए विद्वत्, परिषद द्वारा शलाकापरीक्षा-प्रतियोगिता परीक्षाओं की परम्परा, राजा, धनीमानी, समाज सेवी संस्थाओं, नागरिकों द्वारा आयोजित होती थी। बिना जय-पराजय की भावना से विद्वानों के आपसी मनोरंजनार्थ इस प्रकार के विद्वज्जन-विनोद के आयोजन काशी की सरिमा के अनुकूल थे, जिनमें सम्मिलित विद्वानों को समान रूप से दक्षिण, अंग वस्त्र, मिष्ठान आदि देकर सत्कार करने की विशिष्ट परम्परा सदियों तक विशेष रूप से विजयादशमी, दीपावली, होली, नवरात्र, नागपंचमी आदि पारम्परिक त्योहारों पर नगर के धनी मानी गुणग्राहक सम्भ्रान्त नागरिकों एवं सामाजिक संस्कृतिक चेतना केलिए समर्पित संस्थानों के माध्यम से आयोजित होती रही है, जिससे काशीस्थ विद्वानों की बुद्धचातुर्य, शास्त्रीय चिन्तन, दार्शनिक अनुशीलन के विकास के लिए किए कार्यों से सामाजिक चेतना का मार्ग उद्बुद्ध होता गया। ऐसे ही आयोजन यहाँ के विद्वानों की बुद्धि की उत्तरोत्तर चमत्कारिणी अभिवृद्धि की उपादेयता के लिए सशक्त माध्यम एवं अपरिहार्य माधन थे।

यहाँ के विद्वान न केवल समस्त कलाओं में ही नहीं, अपितु व्याकरण, वेदान्त, न्याय, कर्मकाण्ड, दर्शन, धर्मशास्त्र आदि के शास्त्रार्थ में भी अत्यन्त प्रवीण एवं पटु थे। सुप्रसिद्ध वैयाकरण केसरी महामहोपाध्याय पं. दामोदर शास्त्री एवं मैथिली विद्वान पं. बच्चा झा के बीच हुआ प्रचण्ड ऐतिहासिक शआस्त्रार्थ अब इतिहास की वस्तु है जिनके शास्त्रार्थ को देखने सुनने के लिए विद्वानों सहित हजारों की सँख्या में जनसाधारण की उपस्थिति थी। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती से काशी के मूर्धन्य विद्वानों में प्रसिद्ध पं. बालशास्त्री का शास्त्रार्थ आर्यसमाज के इतिहास की विशिष्ट घटना है। सर्वत्र विजयश्री प्राप्त स्वामी दयानन्दजी को काशी के विद्वानों के सम्मुख पराजय स्वीकार करनी पड़ी। काशी के स्वनामधन्य विद्वान महामहोपाध्याय गंगाधर शास्त्री का बल्लम सम्प्रदाय के विलक्षण विद्वान प्रज्ञाचक्षु श्री गट्टूलालजी से काशी स्थित गोपाल मंदिर में जो प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था, वह आज भी विद्वानों में चर्चित है जिसमें महामहोपाध्याय श्री गंगाधर शास्त्री को विजय श्री प्राप्त हुई। इस प्रकार की शास्त्रार्थ सभा आये दिन काशी में होती रहती थी। जिसमें अनेक महत्वपूर्ण शास्त्रों मत-मतान्तरों के खण्डन-मण्डन एवं शास्त्रीय उद्धरणों का सर्व सम्मति से प्रतिपादन विद्वानों द्वारा होता था। आज भी नागपंचमी के दिन नागकुआँ पर विद्वानों एवं संस्कृतनिष्ठ, अध्ययन-अध्यापनरत छात्रों के बाच शास्त्रार्थ की परम्परा अविच्छिन रूप में चल रही है। अनेक ब्राह्मण-परिवारों में विवाह के अवसर पर वरपक्ष कन्यापक्ष के विद्वानों के मध्य परस्पर विद्वत्तापूर्ण शास्त्रार्थ की परम्परा विद्यामान है। आज से कुछ वर्षों पूर्व तक काशी में पण्डित हीराचन्द्र भट्टाचार्या एवं पण्डित पूर्णचन्द्राचार्य के बाच व्याकरण आदि शास्त्रों के विषय में वाद-विवाद, शास्त्रार्थ की प्रौढ़ता एवं विद्वता दर्शनीय थी।

काशी प्राचीनकाल से ही संगीत नगरी के रूप में देश की सांस्कृतिक-राजधानी के गौरव को प्राप्त रही। यहाँ संगीतकला की उन्नति के लिए शिक्षालयों की व्यवस्थाका वर्णन बौद्धकालीन जातक कथाओं में वर्णित काशिराज ब्रह्मदत्त के शासनकाल में प्राप्त है। साहित्य, दर्शन, न्याय, व्याकरण आदि की भाँति ही संगीत-कला के प्रदर्शन हेतु प्रतियोगिता का आयोजन प्राप्त है, जिसमें यहाँ के प्रख्यात वीणावादक 'गुप्तिल' ने उज्जैन की अपने समकालीन वीणावादक 'मुसिल' को वीणावादन की प्रतियोगिता में पराजित किया था। तानसेन-परम्परा के अद्वितीय प्रतिनिधि रबाब वादक एवं सुर सिंगार वाद्य के अविष्कारक जाफर खाँ एवं संगीत सम्राट तानसेन के दामाद, ध्रुपद की डागुट एवं खण्डहार बाणी एवं वीणावादन में पारंगत, मिश्री सिंह की परम्परा में सुप्रसिद्ध वीणावादक निर्मलशाह के वीणा-रबाब के युगलबन्दी कार्यक्रम अनेक बार गुणग्राही नरेश काशिराज उदितनारायण सिंह के दरबार में आयोजित हुए, जिनमें दोनों ही विद्वानों की विद्वता से सारा दरबार प्रभावित हुआ। भारतीय संगीत के उत्थान के लिए पूर्ण समर्पित विद्वान श्री विष्णु नारायण भारतखण्डे एवं संगीत मनीषा श्री विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जैसे उत्कृष्ट विद्वानों से, काशी के पूर्धन्य विद्वानों में संगीत शास्त्रा, गायकी, नायकी

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

काशी/वाराणसी की संगीत परम्परा

सभी विधाओं के सुयोग्य प्रतिनिधि श्री दरगाही मिश्र आदि के मध्य काशी के ठठेरी बाजार मुहल्ले में 'काशी संगीत-समाज' की सभी में संगीतविषयक अनेक प्रचलित-अप्रचलित रागों, तालों, बन्दिशों एवं शास्त्रों में वर्णित अनेक धारणाओं पर विशद विचार-विनिमय, तर्क वितर्क, खण्डन-मण्डन आदि का परस्पर आदान प्रदान किया गया। अनेक भ्रान्तियों के उन्मूलन हुए और इन विद्वानों की ज्ञानगरिमा से भातखण्डेजी, विष्णु दिगम्बरजी भी विशेष प्रभावित हुए।

इस प्रकार अध्ययन, अध्यापन, साधना, चिन्तन, मनन के साथ-साथ अपने-अपने विषय में शास्त्रार्थ-कला-निपुणता काशी के विद्वानों का मानस-मनोरंजन थी, जिसमें काशीस्थ-विद्वानों को अपूर्व निपुणता-सफलता प्राप्त थी. देश के अनेक प्रान्तों से काशी आ बसे विद्वानों का एकमात्र ध्येय शास्त्रों का घवेषणापूर्ण अधाययन ही थी। तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम, गुजराती, मराठी, मैथिली, बंगला, पंजाबी ही जिनकी मातृभाषा थी, उन विद्वानों ने भी संस्कृत में अध्ययन कर अपने ग्रन्थों का प्रणयन किया। संस्कृत भाषा इनके विचारों के प्रकाशन की वाणी और संस्कृत ही इनके जीवन की प्रक्रिया थी, जिसका निर्वाह यावज्जीवन इन विद्वानों ने किया। काशी के नागरिकों में शस्त्र विद्या, मल्लविद्या, शास्त्र-अध्ययन, काव्य, नाट्य, साहित्य, संगीत कला के प्रति सहज अभिरूचि, गौसेवा, दीन दुःखियों के प्रति मानवीय दृष्टिकोण, देवभाषा, राष्ट्रभाषा, देश भक्ति, अन्याय के प्रति विरोध प्रकट करने की तत्परता एवं काशी की प्राचीन परम्परा एवं मर्यादा के लिए पूर्ण समर्पित भावना विशेषरूप से विद्यमान रही। मन, वाणी, कर्म में नैतिक शुद्धता की भावना एवं पूर्ण मर्यादा एवं परम संतोष के साथ प्रसन्नतापूर्वक जीने की कला शैली का आज भले ही अभाव दिखाई देतै है, किन्तु अतीत में इन मर्यादित गुणों के साथ ही काशई वासियों की अपनी विशिष्ट जीवन्त पहचान थी। पीतल, हाथी दाँत, लकड़ी, स्वर्ण, रजत आदि पर विशिष्ट, सुगन्धियों, इत्रों के निर्माण-विधिकी परिपक्कता, अनेक कलाओं में पूर्ण पटुता आदि गुणों के साथ सरलता, सौम्यता, वनम्रता, धार्मिक निष्ठा, स्वाभिमान के साथ पुण्य पावनी गंगा की धारा में नित्य स्नान, नाटराज शिव, पराम्बा पार्वती के दर्शन पूजन का अभिलाषी, सभी कलाओं की विज्ञता में निमग्न, मर्यादित प्राचीन अमोद प्रमोद की कलात्म् परम्पराओं द्वारा सुरूचिसम्पन्न मानस मनोरंजन कर आनन्दमय जीवन जीना काशी की विशिष्ट पहचान रही है।

संगीत के प्रति विशेष आदर-प्रेम काशीवासियों में प्राचीनकाल से अविच्छिन्न चला आ रहा है, जिसके कारण लोक संगीत में प्रचलित अनेक शैलियाँ यहाँ के विद्वानों के सत्प्रयास से शास्त्रीय संगीत की परिधि में न केवल प्रतिष्ठित हुई, अपितु उन्होंने अपना विशेष स्थान बनाया। अभि जात्य वर्ग तक सीमित शास्त्रीय संगीत, संगीत गोष्ठी एवं सम्मेलनों के माध्यम से सार्वजनिक रूप में समस्त काशी के संगीत प्रेमियों के उत्कृष्ट मनोरंजनार्थ गंगा की सायंकालीन धारा में बड़ी-बड़ी सुसज्जित, झाड़-फानूशों के प्रकाश से आलोकित नाव पर होली के बाद पड़ने वाले प्रथम मंगलवार से आरम्भ प्रसिद्ध संगीत-मेला 'बुढ़वामंगल'की उत्कृष्ट कल्पना काशी की ही देन है, जिसमें धीरे-धीरे काशिराज के अतिरिक्ति देश के अन्य नरेशों, संगीत प्रेमी रईसों, जमीनदारों, ताल्लुकेदारों ने भी बढ़ चढ़कर भाग लिया और सारी-सारी रात गंगा के तटों पर एवं नावों पर बैठकर देश के सुप्रसिद्ध कल विदों की संगीत साधना का तन्मयता से आनन्द प्राप्त किया। चैत मास में गुलाब की पंखुड़ियों से सुगन्धित, गुलाबी, परिधानों, आवरणों, गुलाब इत्र, गुलाब जल से सिंचित गुलाबी वातावरण में चैती गायन शैली की लोक परम्परा की परिधि में समेटने का श्रेय 'गुलाब बाड़ी समारोह' के माध्यम से साकार करने की मधुर कल्पना भी काशी ही की देन है, जो महाकवि कालिदासकालीन मदनोत्सव, हिण्डोलोतस्व, ऊदुमंगल आदि उत्सवों का नवीन रूप हैं।

इस प्रकार प्राचीनकालीन परम्पराओं से रससित अमोद-प्रमोद एवं मनोरंजन की विविध कलात्मक-वैशिष्टय विज्ञ काशी नगरी अपने मर्यादित आचरणों के साथ उच्च सुरूचिपूर्ण मनोरंजन में ही भावज्जीवन आनन्दमग्न जीवन जीने की आदी रही है, जिसके कारण उसे यहाँ की गरिमापूर्ण जीवनधारा से हटकर, अन्यत्र जीवन यापन के लिए जाना अत्यन्त कष्टमय प्रतीत होता है, यहाँ की सुखद, सन्तोषप्रद दैनन्दिन जीवन चर्या ही उसे पूर्ण सन्तुष्टि प्रदान करती है। इस प्रकार की जीवनधारा को निरन्तर गतिमान बनाये रखने में राजा से लेकर जन सामान्य तक, विद्वानों से लेकर साधारण शिक्षित तक, धन श्रेष्ठी से लेकर अलमस्त, फक्कड़ त्रिकालदर्शी फकीर तक, काशीस्थ, विद्वानों के साथ ही काशई में बाहर से आये एवं आ बसे संगीत आदि कलाओं के मूरधन्य विद्वानों तक के काशी की प्राचीन गरिमा एवं सांस्कृतिक चेतना को गतिशीलता प्रदान कर अपना अमूल्य योगदान दिया है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

काशी/वाराणसी की संगीत परम्परा

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.